लीलटांस

कन्हैयालाल सेठिया

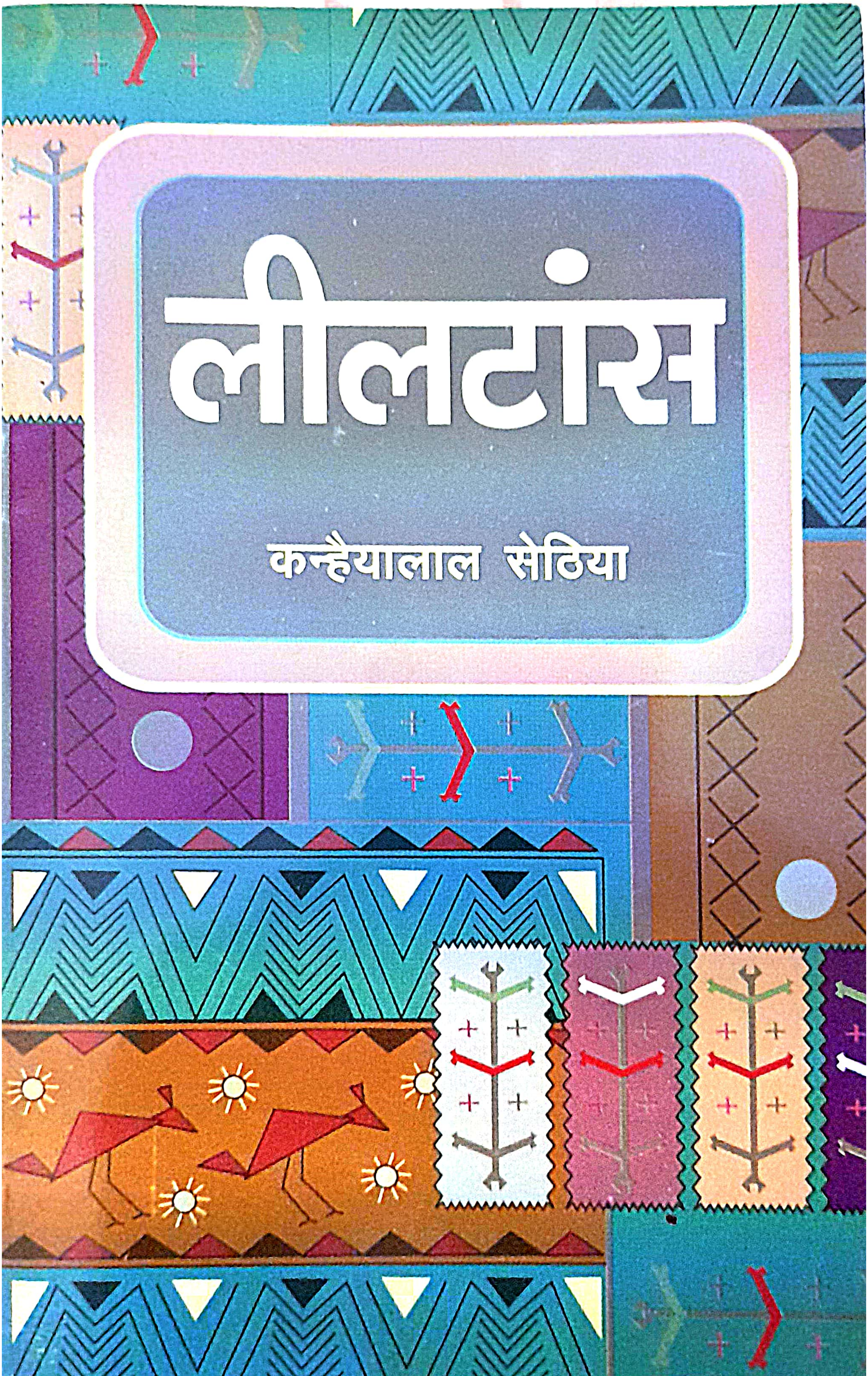

लीलटांस

कन्हैयालाल सेठिया

राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

दो सबद

'लीलटांस' में है सिरजण री पुकार, बीं रो ही पडूतर ओ संसार, बा ही करै नसवर नै अमर, माटी नै परमेसर।

— **कन्हैयालाल सेठिया**

५ सितम्बर १९७३ ई०

बानरवाळ

■ ● ■

मादा	7
पिछांण	8
साच	8
भेदू	9
ओपरो	9
साच'र झूठ	10
साच'र सपनूं	10
मिणधर सरप	11
दीठ'र अदीठ	11
निजर	12

निराकार	•	12
ईश्वर	•	12
सगुण-निरगुण	•	13
राग'र नाद	•	13
थितप्रग्य	•	13
सापेख	•	14
छूट	•	14
निरपेख	•	15
नेमसर	•	15
डर	•	15
त्याग'र भोग	•	16
नरग-सरग	•	16
सारीसो मुरको	•	16
जिनगानी रो आंच	•	17
फरक	•	17
आसथा	•	18
दुख	•	18
करणी जार्णीजै	•	19
चुगलिया दीया	•	19
थोथो बडपण	•	20
इजगर री लीक	•	20
तूंतड़ा ही बा	•	21
पिच्छम'र पूरब	•	21
रतनागर	•	22
रतन दीया	•	22
जुग-भीषम	•	23
छेह'र नेह	•	24
ओळख	•	24
मोटो डर	•	25
एक दीठ : दो साच	•	25
कविता	•	26
जलम भौम	•	27
सदेही पीड़	•	27
गांव	•	28
सै'र (१)	•	29
सै'र (२)	•	29
जय-जात्रा	•	30
दोपारी	•	30
सौ पगी हूण	•	31
आंधी	•	32
राम नाम	•	33
धरती रो बीच	•	34
मजल रो हेलो	•	35
निलज्जो दुंद	•	35
नुवैं धान री सुगन	•	36
सिरजनधरमी	•	37
बसन्त	•	39
सबद-अमरित	•	40
उन्याळो	•	41
सियाळो	•	42
चौमासो	•	43
दिन	•	43
वभूत	•	44
जलम दिन	•	44
गीतां री दीठ	•	45
चेत	•	46
रमत	•	47
सिंझ्या	•	48

मादा !

भोरा भोर
फरांस पर बैठी लीलटांस
चाणचक ही उडगी,
आभै रै अणपार लिलास में—
जागगी कोई याद
कोई सपनूं,
उँची'र ऊँची
उडती गई
लारै छूटग्यो आळो
मोबी बचिया,
अबै बा
कोनी मां
खाली मादा है ! ●

पिछांण !

जद स्यूं हुई है स्याणी
दीठ री छोरी पिछांण
फिरै है ऊरूं फरूं सा हुयोड़ा
आज तांई सागै रम्योड़ा
बापड़ा बाळगोटिया अरथ।
धौळो धौळो सगळौ ही–
दूध हो पैली
अबै नुंवै भायलै–
मन रै सिखायां सिखायां गैली
काच रै टुकड़ां में ही
फरोळण लागगी
कचकोळ्यां'र हीरा,
झूठ रै परवाणैं सारू
कर'र नाख दिया
साच रा लीरा लीरा,
देख देख'र जायोड़ी रा कुलछ
घणूं ही बळै
दीठ रो पेट
बारै पड़ग्यो छोरी रो पग
अबै कांई हुवै ? •

साच !

साच ?
सीर रो धन
स्याळिया खावै,
सपनूं
आंख रो तारो
धिराणां लडावै ! •

भेदू !

मनैं ठा है
तूं है ई जंगळ रो भेदू,
थारै पगां लाग्योड़ी है
ना'र री गुफा
इजगर री खोह
मीठै पाणी री तळाई'र
आम जामन रा रूंख,
पण मती दिखा
थारी जाणकारी
च्यारां कानी भाग भाग'र
भटक ज्यासी नुंऊँ बटाऊ
मंडूयोड़ा देख'र
सगळी दिसावां में खोज,
तूं तो चाल चाल'र
मोटो कर बो ही मारग
जको जावै है
ई घणघोर अटवी स्यूं बारै ! •

ओपरो !

देख रया हो
जको भलो चैरो थे
ओ कोनी म्हारो,
जे चल्यो जाऊँ
ई चैरै स्यूं घरां
समझसी
कोई ओपरो है
म्हारी लुगाई'र पाड़ोसी ! •

साच'र झूठ !

चाकी रो
हेटलो पाट
साच,
ऊपरलो पाट
झूठ,
साच रैं
सामी छाती कील
झूठ रैं
पूठ में मूठ ! •

साच'र सपनूं !

आंख्यां रैं आगै
केळां रा बगान
नारेळां रा वन
लीलो समन्दर
सोनल मछल्यां
रूपल सीपड़्यां
दूधिया संख,

दीठ में उग्योड़ा
कैर'र खेजड़ा
बंवळ'र रोहीड़ा
मोरिया'र धोरिया
उजाड़ निरजण,

किसी साच
किस्यो सपन ? •

मिणधर सरप !

मन,
मिणधर सरप
मेलै मांझळ रात
मिण अळघी,
करै बीं री जोत में
चुग्गो पांणी,
सो ज्यावै बीं खिण
म्हारी चेतना
रह ज्यावै
हाथ में ही
ज्ञान रो गोबर
जागूं'र पिसतावूं
फेर कठै मिण ? •

दीठ'र अदीठ !

अदमी रै
लारै
अदीठ भीड़,
आतमा रै
लारै
अदीठ परमातमा,
दीठ में आसी औ
जद कोई करसी
लड़ाई'र का प्रेम ! •

निजर !

रूंख में
निकळसी
कठै कांटो'र कळी
कूंपळ'र फळी
आ कुदरत जाणै,
मैं माटी
म्हारी निजर
बीज पिछाणै ! •

निराकार !

परतख नै
कांई
परमाण री दरकार !
कांदै रा
छूंतका उतार
आकार में
निराकार ! •

ईश्वर !

कुण देख्यो है
ईश्वर ?
ईं सवाल रो जबाब
ओ तळाब,
जको कोनी देख्यो समन्दर ! •

सगुण- निरगुण !

मैं कोनी बजाऊँ
मनैं बजावै है
ओ सितार,
बंध्योड़ी है ईं री झणकार स्यूं
म्हारी चेतना
जिंयां दीयै री बाती स्यूं लौ,
छू'र ईं रा तार
पकड़ लै गत आंधी आंगळ्यां
सुण'र ईं री धुण
सगुण बण ज्यावै निरगुण ! •

राग'र नाद !

बंसरी में पांच'र
संख में एक छेद,
अतो ही राग'र
नाद में भेद,
एक परतख गीता
दूजो संदेही वेद ! •

थितप्रग्य !

कता ही
रूप'र जोबन
आवै मुंडागै
पण दरपण
कोनी रळावै मन
दीठ रै सागै ! •

सापेख !

टूटग्यो
सात तारां में स्यूं
एक तार,
सितार
बणग्यो बळीतो,

खूटग्यो
पांच तत में स्यूं
एक तत,
सत
हुग्यो अळीतो ! •

छूट !

म्हारी बाखळ में है
लाल धोळा पीळा कनेर
एक सी माटी'र गगण
पानड़ा'र डाळां में
कठै स्यूं आया
औ अळघा अळघा रंग ?
आंरी चेतणां नै
कुण दीन्ही आ छूट?
जको औ कर्‌यो सत नै
आप री दीठ सारू अणभूत ! •

निरपेख !

लगा'र दिवलै रैं
पलीतो
थाक्योड़ो सूरज
हू'र नचीतो
आभै रै मैं'ल में
निधड़क सूतो ! •

नेमसर !

चोर रा हाथ
साचा
पण पग काचा,
कीं न कीं कसर
राखै कुदरत नेमसर
नहीं' स कदे'र रो ही
खिंड भिंड ज्यातो
भानमती रो पसगर ! •

डर !

पड़ी हाथी पर
कीड़ी री निजर
देख'र हालतो चालतो डूंगर
बड़गी बिल में डर'र !

पड़ी कीड़ी पर
हाथी री निजर
देख'र जुळघती परतख मौत
करली सूंड ऊपर ! •

त्याग'र भोग !

टोखी पर
पूग्यो फूल
मैक बांट'र
झरग्यो,
आ'र बैठो कागलो
भख देख'र
उडग्यो ! ●

नरग-सरग !

अकूरड़ी,
फूल नै नरग
बीज नै सरग ! ●

सारीसो मुरको !

जिनगानी'र मौत
साईन्यां
सारीसो मुरको,
दोन्यां रो भरतार जीव
राखै दुभांत
एक नै सुहाग
दूजी नै दुहाग,
पण बुझतां ही जोत
सागै हुवैली सती
विजोगण मौत ! ●

जिनगानी री आंच !

जिनगानी री
आंच में सेकै
भूखी मौत
आपरी रोटी,
धीमी पड़ै'र
फेर सांसां स्यूं सिलगा'र
कर लै सजळी,
स्यात है हाल
रोटी री कोरां काची ! •

फरक !

मजल पर
पूग्यां पैली ही
टूटगी काची लैर
चनेक अणमणी हू'र
मींडकी छळांग ली
सपकै'र पकड़ली
नुंई लैर री आंगळी
देख'र आई जी में
जे पग थाम लै जिनगानी
तो कांई फरक
मौत में'र बीं में ! •

आसथा !

दिवलो,
न चढ़तै सूरज नै देख्खै'र
न ढळतै नै,
बीज,
न उगतै रूंख नै देख्खै'र
न फळतै नै
पण
वां री आसथा है
बळणै में'र गळणै में ! •

दुख !

दुख,
सिंघणी रो दूध
ई नै चाहीजै
सोनै रो गौवणियूं
तिड़कज्या काचा पिंड
ओ पारो
जांतो रह
टळक टळक'र
आंसूड़ां में ! •

करणी जाणींजै !

मिनख रो कांई
सळ्यो'र अळ्यो
बगत पिछाणींजै,

रूप रो कांई
रूड़ो'र कोजो
सत पितवाणींजै,

उमर रो कांई
लांबी'र ओछी
करणी जाणींजै ! •

चुगलिया दीया !

कानां काचो
सूरज
कर नाखी
तारां रै बाप
अन्धेरै री हित्या,
पण पराये सुख दूबळा
चुगलिया दीया
कती'क ताळ जिया ! •

थोथो बडपण !

हुई
अणहुई
ऊंट री थुई
थोथो बडपण,
जग्यांसर
बापड़ी एडर
बैठण रो अडखण ! •

इजगर री लीक !

मारग कोनी
आ है मोटै इजगर री लीक
पाछो बावड़
टाबर है हाल
आंख्यां री ओळख
बैठो है बिल में काळ
अड़ीकै है भख
सुण चेतण रो हेलो
उंतावळा बटाऊ
ओ कोनी गेलो ! •

तूंतड़ा ही बा !

दाणां नहीं तो
तूंतड़ा ही बा
उगो'र मत उगो
भौम तो दबा,

नहीं सरी कळा
गुळेच्यांई खा
पांचवै सवारां री
गिणती में तो आ ! •

पिच्छम'र पूरब !

लड़ाई कुदरत स्यूं
सभ्यता पिच्छम री,
भेळप सभ्यता
पूरब री,

सूरज जठै निमळो
चाहीजै बां नै
आंख रो उजास,
जठै सबळो
बां नै आतमा रो परगास,

पिच्छम री जिनगानी
सासतो भाजणै री एक होड,
पूरब री
थम'र सोचणै री एक मोड़,
अतै'क फरक स्यूं
पिच्छम में जलमै जुद्ध
पूरब में बुद्ध ! •

रतनागर !

राखै काळजै में लाय
इस्यो कठै
तळाब रो हियाव?
आ तो समदर री ही खिमता
ढाबै बड़वानळ सिलगता,
कांई मजाल
आ ज्यावै चैरै पर
गिट ज्यावै
मांय री मांय भोभर,
बै ही खीरा
बणै मोती'र हीरा
नहीं तो कुण कैंतो
कोरै ही लूण नै रतनागर ! •

रतन दीया !

भलांई दै
लगोलग फूंकां
नाख उपराथळी धूळ
न कजळावै'र बुझै
औ रतन दीया,
जे करणीई चावै
अदीठ
आं री जोत
मींच लै दीठ
फेर खेल, खुल'र
कोनी दिखै
तनै थारी छयां !

जुग- भीषम !

चन्नण रै वन में
सैल कर'र
मुड़ग्यो पाछो
उतराधो
सूरज रो रथ,
किचरीजग्यो
घोड़ां री टापां स्यूं
हिमाळै रो गरब,
घालण लागगी डील
साव माड़ी नद्यां,
जलमण लागग्या
बगत रै घरां
डीघा दिन'र बावनी रातां,
निसरग्या बारै
धरती री कैद तोड़'र
बागी बीज,
साम लियो सिर
पगां तळै चिंथीज्योड़ी दूब,
पीड़ा'र अभावां री
सेज पर सूतो
जुग रो भीषम
अडीकै हो
आ ही पुळ घड़ी
अबै इन्छ'र छोड़ैलो
आप रो खोळियो ! •

छेह'र नेह !

फूटग्यो घड़ो
बुझग्यो दीयो
सपकैण जाता रया
जळ'र अगन,

झरग्यो फूल
टूटग्यो सपनूं
छोड'र कोनी गया
टेक'र मन ! •

ओळख !

आंई
खिणां में है
काळ जयी खिण
दीठ चाहीजे,

आंई
सबदां में है
परम सबद
परख चाहीजे,

आंई
सुरां में है
अनहद
ओळख चाहीजे ! •

मोटो डर !

रोही में फिरै ल्याळी
आभै में गरणावै सिकरा
गेलां में रळकै वासक नाग
पण सै स्यूं मोटो डर भूख,
जको कोनी बैठण दै
लरड़ी नै बाड़ै में
कबूतर नै आळै में
पग नै घर में ! ●

एक दीठ : दो साच !

एक बगत
अलूणूं ही सही
को तुड़ावांनी रिपियो
सिझ्या सुवारै
बिक ज्यासी मूंज
जणां बापर ज्यासी
खुला पईसा।

रिपियो
हाथ रो मैल
करो खुदरा
कीं रै बैठी है लिछमी
पीढो ढाळ'र
फेर क्यां रो फिकर
खरच रा भाग मोटा ! ●

कविता !

भासा री खिमता नै
तोलणै री
ताकड़ी है कविता,
सबदां रै भारै में
चन्नण री
लाकड़ी है कविता,

सांच है सौ टंच
न नुवीं है
न पुराणी है कविता,
मिनख रै हियै में
उकळतै ओभर री
सैनाणी है कविता,

गुड़ है गुंगै रो
उठा-पटक रो
अखाड़ो कोनी कविता,
औखध है आतमा री
माटी री काया रो
भाड़ो कोनी कविता ! •

जलम भोम !

कोनी म्हारी
सींवां पर हिमाळो,
आंगणियै गंगा'र जमना
वनां में चन्नण'र देवदार
बाड़्यां में काजू'र केवड़ा,

म्हारी सींवा पर है
जुझारां री देवळूयां,
लोही स्यूं तिरपत आंगणियूं
केशरिया बानां पहरूयां रोहीड़ा
जौहर रा साख्खी फोग'र खेजड़ा ! •

सदेही पीड़ !

रोही री छाती पर
गूमडै सी'क ढाणी
धिराणी री झर झर कंथा–
कसूमल लूघड़ी
दुखणियें री ललाई,
धिराणैं रो लीरा लीरा–
धोळो रमालियो राध,
मखवाय सा भिणकता
भूखा कोजा काळा टाबरिया,
एक संदेही पीड़
जकी में चभका तो चालै
पण हाल गूंडो बन्द है ! •

गांव !

ई काणती कमेड़ी रो आळो
जाटै बास रै पींपळ पर है,
आ गंजली कागली
गेली परली नीमड़ी पर ब्यायोड़ी है,
ओ झींपरियों गंड़क
लीलगरां री ढाणी रो है,
हीरू कुमार री बैड़की
काल टोगड़ी ल्याई है
टाबरां जोगी धार हुगी,
रात मोती बळाई रै घरां
जागण हो
आछी मनवार खातर करी,
औ खोज तो मानदासजी रा है
सुधियां ही कुनैं निसरग्या?
छोरां, भूतियै खेजड़ै रा खोखा
चोखा कोनी
ना खाईज्यो, उलाकता फिरोला,
सोहन माळी री सांढ
अबार बिराईज'र मरगी
गरीब नै हांडी हेटै करगी,
ओळखाण'र संवेदणा रो नांव–
गांव जठै आतमा परमातमा ! •

सै'र (१)

सै'र,
एक घायल सुन्याड़
जकी रो अदीठ फळसो'र बाड़
भेळ'र बड़ग्यो मांय
हाकै रो सैंठो गोधो
सींगां में उळझग्यो आभो
पोठां स्यूं निपीजगी भौम
खुरां हेटै चिंथीजगी जिनगानी
सै'र,
एक लोही झ्याण सुन्याड़ ! •

सै'र (२)

सै'र,
कुंआरी सुन्याड़ सागै
करूयोड़ो बलात्कार
रैग्यो अणचायो पेट
जलमगी दोगळी सभ्यता
कुण पकड़ै ई कुळनासी रो हाथ
डावड़ी बण'र बापड़ी
करै आप रा दिन आघा ! •

जय-जात्रा !

बगै है
आद स्यूंई अन्धेरो
दाबतो च्यानणै रा खोज
पण फाटतां ही भाख
बंध ज्यावै
बापड़ै रै पगां में थड़ा,
ओसाणचूक हुयोड़ो
मांडै
दो च्यार अळूघतै तारां स्यूं राड़
बवै लोही रा रेळा
रंगीजै अगूण रै फळसै री थळी
आं नान्ही जोतां रै
बळिदान स्यूं अजाण
मोटो सूरज
रोज सरू करै
आप री जय- जात्रा ! •

दोपारी !

पसरगी पाळ पर
न्हा'र गांव रै नाडियै में
जेठ री कंवारी दोपारी,
देख'र छोरी नै एकली
करै कुचेरणी अचपळा ऊन्दरा
बा मांड़ै चील री छयां
भाग'र बड़ज्या बिल में ! •

सौ पगी हूण !

धपाऊ मेह
हरी कचन
घोटां पोटां बाजरी
लीला छिम
खारियै मान मोठ
कड़्यां सूदो गुंवार
बेलां रैं बैथाक चिंयां
को कातरो न फाको
रामजी री मैर
समूं जोर रो
साख सवाई
करसै रैं नेणां में सपनां
मनड़ै में नेठाई
पण कुदरत री नीत में खोट
चनेक में फिरग्यो बायरो
चालगी बैरण नागौरण
बैठगी पींदै आल
सूखगी खेत्यां
पड़ग्यो अणधारूयो काळ,
मिनख, बरसावै नकली बिरखा
पण कठै नकली पून
दो पगी काया
सौ पगी हूण ! •

आंधी !

दिन'र रात
चाल्यो रेळो
कर दी धरती नै
पाछी कुंआरी
बुरीजग्या ऊमरा
भिसळग्या खेत
भाजता फिरै
धोरा'र पडाळां
चढगी खंख
हुगी गुदमैली
सूरज री आंख
खिंडगी खेह
बरसै रेत रो मेह
रूजग्या रसतां रा कंठ
बंधगी ओकळ्यां
उडग्या आळा
घालै बा'र
कमेड़्या'र चिड़कल्यां
धूजै थर थर
बांठ'र बोजा
झिकोळीज्या कोजा
पकड़ लिया पग
बड़'र पींपळ
पसरग्या आडा
गळग्यो गरब

पड़गी माथै में धूळ
खूटगी पुन्याई
पण थमतां ही
पून रो वेग
उमटी कळायण
टुहुक्या मोर
बोली टींटोड्याँ
जागग्या धरती रै
तम्बूरै रा सातूं सुर
बिसरगी दुख बणराय
मुंडागै आई साच
सिरजण री जामण
असराळ पीड़ ! •

राम नाम !

सोनै रो पींजरो
मखमल री खोळी
रतन बाटकां में
दाड़म'र दाख
सिखावै सूवटै नै
बोल मिट्ठू
राधेस्याम
सामूंसाम
गळी में बैठो
भूखो सूरदास
छोड़ दिया पिराण
रट रट'र नाम ! •

धरती रो बीच !

घणां ही है
बतावणियां
जेई रोप'र
धरती रो बीच,
घणांई है
उठावणियां
राग भेळी राग रळा'र
झूठी गंगाजळी,
बा नै ठा है'क
भीड़ रै हुवै है
खाली जीभ'र कान
आंख्यां रा आंधा
उठावै थोकाथोक कूड़
को ताकड़ी चाहीजै न बाट
के बाणियूं'र जाट
सै करै
चिमतकार नै निमसकार,
लादै कोनी तो कोई
साच रो लेवाळ
कदै कदास आवै ही-
तो मांगै
मासो'र का तोळो
कीं न है चीज री पीक
चाहीजै रोळो ! •

मजल रो हेलो !

गल्यां,
गेलां स्यूं ही फंटै
जे बै नटै'र
जींवती माखी गिटै
तो कोनी धिकै
आ अलूंणी झूठ,
कोई ढाणी'र
कोई तळाई
कोई बांठां'र
कोई बोजां
कोई खेत'र
कोई खळां
रुळ रुळा'र
झक मार'र
ढळतै सूरज
पाछो पकड़ लेसी गेलो
कती'क ताळ करसी
सुण्यो अणसुण्यो
मजल रो हेलो ! •

निलजो द्वंद !

लड़ रयो हूं
इकलहत्थो
एक अदीठ जुद्ध
सबदां रै व्यूह में
ई खिण तांई
कोनी बंध्यो
चेतणा रो बैरी 'मैं'
पोथ्यां रै पानां में
बैठा है काळो मूंडो कर'र
म्हारा हार्‌योड़ा विचार
मनड़ै री सींव पर ऊबो
हंसै है खाक पिदा'र
निलजो द्वंद ! •

नुंवैं धान री सुगन !

मत पाड़
बगत रो माजनूं
जे पलट्यो ओ पाछो
कर'र छोडैलो
स्यान रा टक्का,
कयो मान
उपण बायरै री रुख सारू
जणां हुवैला अळघा
तूंतड़ा'र दाणां
नहीं'स पड़्यो रह भलांई
नाख्यां खळै में गूदड़ा
दुरकार बोकर
गाठैं पर हंगता गंडकड़ा
भूख चेतीनों'र लपकैण आ ज्यासी
गेलैसर
थारो रुळयाड़ मन
लै अठै तांई आवै है
पाड़ोसी रै झूंपै में खदबदतै
नुंवैं धान री सुगन ! •

सिरजनधरमी !

पड़्यो काळ
करै भूख भूआजी थड़ी
जाबक धौळी आभै री आंख
भौम रो मूंडो फक
जा लियो पांणी
ऊरतो पताळां
भाग छूटी मऊ
फिरैं डिडाता ढोर
रात्यूं करळावै मोर
ऊबा सूखै
कुंआरैं हाथां स्यूं
दूध पियोड़ा पींपळ
कठै जावै पांगळा?
आं रा ही साथी
गांव रैं गौरवैं रा देव
हूण रै धक्कै
भींत रा लेव
संकळाई'र चिमतकार
धाप्योड़ां री ठुंगार
पड़्यो बिखो
ई नै लिखो'र छपावो
गावो सूखी संवेदणां रा गीत
आ है आज रै बडबोला
सिरजणधरम्यां री नीत !
करै निकमाळै में

सबदां स्यूं रमत
धाप'र जीमै
दोन्यूं बगत
फेर साव निरवाळा
कठै है बिस्या कळावंत
जका करता
कुदरत नै अरदास
मिलाता हिवडै रा तार
झरती नैणां स्यूं धार
उठती कंठां स्यूं
मेघ-मलार
बण ज्यांतो दातार
सूम इन्दर
खुल ज्यांती
बिरखा री नौळी
बा ही कळा
अबै तो
परलाद रो अगन सिनान
गांव री होळी ! •

बसन्त !

मांडै
रंगीलो चैत
बणराय री हथेळ्यां में मैंदी,
घालै
मैक स्यूं सैंगद पून
चौफेर घूमर,
मंडग्यो रोही रै आंगणियै
सुरंगो मोछब,
अगेरै
गीतेरण चिड़कळ्यां
मिसरी मधरा गीत,
नाचै
सूरज री सोनल किरणां में
पींपल री
तांबै वरणी कूंपळ्यां,
लटकै
जाळां रै
गुलाबी मोत्यां सा जाळोटिया,
भणकारै
अळूंघती कळ्यां रै कानां में
तिरसाया भंवरा,
उडै
हरियल सुआ
लियां रतनाळी चूंचा में
दाड़म रा माणक दाणां,

भरै
अचपळा मिरघला चौकड़्यां
मूंडै मे दाब्यां काची दूब,
टेरै
रूपल रातां में
अलगोजो मूमल रो गीत,
सुण'र बिलखै भौम
निसकारा नाखै गिगनार ! •

सबद-अमरित !

लिखारा !
मती बणा
कलम नै
भोगी रसियै री बंसरी
निलजै चितेरै री कूंची
आ तो है
सुरसत मां री
संजीवणी जड़ी,
परगासै आतमा री जोत
मेटै जिनगानी रो दुंद
ओळख ई री खिमता
ससती रागळ्यां'र
थूळ बिंबां में
मती गमा
ई री नोक स्यूं झरतो
सबद रो अमरित ! •

उन्याळो !

समझ'र
आभै रै मून नै
निमळाई
माथै पर चढ़ग्यो
अनीतो सूरज,
सुण'र
सूनी रोही में
आपरी बोली रो पडूतर
इकलंग किलखै
भोळा तीतर,
झिकोळै
लू रा खाथा लपका
मोरियां री लाम्बी पूंछां,
कुतरै
तिरसाई गिलारूयां
रूंखां री काची कूंपळ्यां,
रगड़ै
भख नै भरमाण तांई
आपसरी में चूंचां
नीमड़ै पर बैठा
कुचमादी कागला,
उठै
भोम रै अन्तस नै
मथ मथ'र
डीघा बघूळिया,
करै
ईंयां पूरी
निरजण उजाड़ मे
बैठ्यो उन्याळो
आप री जूण ! ●

सियाळो !

चंपेली रै
नानड़िये फूलां सो
लजवंतो
सियाळै रो दिन,
सूरज उगतो ही करै
बिसूंजणै री हर
गूधळक्यांई
पड़्यो सोपो
ओसरग्यो सागीड़ो रठ
जागगी धूण्यां
पोढ्ग्या पिणघट
सबद रै नांव
गांव में बड़तै एवड़ रो
एकल बाजतो टोकरियो
का मारग बगतै
मढुआ ऊंटा री गाज,
सुंई सिंझ्या ही घुळै
डोकरै आभै री आंख
आ'र बैठग्या
आप रै आळां
कमेड़्यां'र मोरिया
बड़्ग्या मिरड़ां में
सुसिया'र नौळिया
ठंठार स्यूं डरती ढापळगी
आख्खी जीवा-जूण
ख्खाली मतीरां री लोभी लूंकड़्यां
फिरै सूंघती
चारै री डूंगर्यां ! •

चौमासो !

ल्यायो
हांक'र असाढ़
आभै री अगूणी बाखळ में
रिड़कती ढूजती
काळी भंवर भैंस्यां
दुवै धरती रैं गोणियै में
धारोधार दूध
फिरै पंपोळती
रोड़ां नै
धिराणी बीज
नहीं लागज्या निजर
ई खातर
घाल दियो
रामधणख रो गळावंडो ! •

दिन !

बगत बावै
अन्धेरैं रैं भैंसै स्यूं
चांद रो हळ,
बीजै
आभै रैं खेत में
तारां रा बीज
जणां निपजै
दिन री सोनल फसल ! •

बभूत !

पण नै कोनी
जद दिसा रो ग्यान
निकमी बात है
मजल वासतै
मन नै मीठो करणूं,
कठै है थारै कनै
उगाण नै सूरज
अतो सोरो कोनी
अणपार आभै रो
खितिज बणणूं,
कोनी चाहीजै
भागतै चमचोर-
अन्धेरै नै गेलो
पण मोटी साच तो
लीक लीक चालसी
बणसी बभूत बा ही जोत
जकी आप रै 'मैं' नै
सेस तांई बाळसी ! •

जलम दिन !

राळ दिया
रेत में
अमी रा
पिचपन टोपा
अबै तो आल
सूखी नी'र काळ
कर लेसी कलेवो ! •

गीतां री दीठ !

हाल ओळखूं हूँ
पीड़ रो उणियारो
कोनी पड़ी मोटी
म्हारै गीतां री दीठ
हाल है सबदां री-
चिमठी में साच
मती अपड़ा मनै
कलम री ठौड़ डांगड़ी
ओज्यूं साव काचो है
थारो 'भोग्योड़ो जथारथ'
थाळी'र माचो है
खाली उपलबधि,
जिनगानी कोनी रखेल
ओ मोटो तथ
भूलगी सुवाद रै लारै हू'र
थारी अधभोळी सिंग्या
थरप्या हा घणी चिंतणां स्यूं बडेरा
मिनखाचारै रा सासता मोल
तुं कर नुंई सिरजणां
मांड मजल रै मारग में
कुंआरा खोज,
कोई क्यूं करसी अखेज?
पण मती काट
सिरै नांव रा नादीदा
सळू सटै दूजती भैंस ! •

चेत

रूंखां पर
चिड़कल्यां घणी'र
पानड़ा थोड़ा
गांव गळ्यां में
मावै कोनी मऊ
खेत खुद भूखां मरै
गिट ज्यावै बायोड़ा बीज
नदी नाळा आप तिरसाया
पी ज्यावै
बरसती कळायण
भौम करळावै
समदर ऊफणै
आभो धूजै
स्यात् सिव करै है
सिस्टी रै
परळै री त्यारूयां
बार बार पटकै फण
आपाधापी रा सरप
धड़ूकै घमंड रो नांदियो
उछाळै सींगां स्यूं धूळ
पण हाल कोनो छोड़ी
मायड़ गोरजा आस
ओज्यूं कोनी झलाया
डमरू'र तिरसूळ
टळ्यां जावै है हूण
ओ भाई मिनख
अबै ई चेत

तांडव री मुदरा बणै
ई स्यूं पैली ही
पकड़ लै सत रो गेलो
सुण अंतस में बैठै
सुन्दर रो हेलो ! •

रमत !

आभै नै पटक'र
दाबलै
बगत नै बिलमा'र
राखलै
हाल कोनी जलम्या इस्या
नखतरी कविया'र का'णीकार
पाणी'र पून
माटी'र अगन
सै बगै
आं दो री सैन सागै
सै ढबै
औ जठै ढाबै
करै आं री ही परकरमां
छऊँ रितुवां
औ ही फूलै'र फळै
पाचै'र गळै
घलै सिस्टी रै घर में
आं रै ही घाल्योड़ो लूण
आं दो री रमत आ
आखी जीवा जूण ! •

सिंझ्या !

एक सिंझ्या
लारै घूटगी
एक मुंडागै
घर बारै काढ्योड़ो सूरज बोल्यो
म्हारै ही तावड़ै री-
तालामेली स्यूं लागै
रात नै गाज बीज हुसी
आंधी रेळो चालसी
कनै कोनी कीं
फकत किरण री-
एक विमळी सी'क तूळी
दिवलो चांसूं'क
तारा सिलगाऊं ?
दोगा चिन्ती में
किसी'क हूण आई
कठै स्यूं बिसांई ?
सुण'र कयो
हिवड़ै में दापळ्योड़ी आस
म्हारो मिणियूं मत मसोस
जीवती राख्ख मनैं
म्हारी पूग में है
थारी मजल ! •